विजयदान देथा का कथा साहित्य
(नाट्य व फिल्म रूपान्तरण के लोकसांस्कृतिक स्वरूप का अध्ययन)

Stories of Vijaydan detha
(A study of the Theatrical and Film adaptation of public culture form)

हिन्दी विभाग (कला संकाय)

पी–एच.डी. उपाधि हेतु

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

को प्रस्तावित

शोध–प्रबन्ध की संशोधित रूपरेखा

शोध निदेशक

डॉ. मनीष रंजन

सह आचार्य – हिन्दी

राजकीय महाविद्यालय, रायपुर,

जिला – भीलवाड़ा (राज.)

शोधकर्त्री

पीताम्बरी वर्मा

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय,अजमेर

सत्र – 2017–18

REVISED OUTLINE OF PROPOSED RESEARCH WORK

प्रस्तावित शोध कार्य की संशोधित रूपरेखा

1. Name of Scholar (In English) : **PITAMBARI VERMA**
   (In Hindi) : पीताम्बरी वर्मा

2. Title of the Research (In English) : **Stories of Vijaydan Detha**
   (A study of theatrical and film adaptation of public culture form)

   (In Hindi) : विजयदान देथा का कथा साहित्य
   (नाट्य व फिल्म रूपान्तरण के लोकसांस्कृतिक स्वरूप का अध्ययन)

3. Location : शोध–कार्य स्थल –

A. Department Where the Work is to be done : Department of Hindi, Government College, Raipur Maharshi Dayanand Saraswati University, Ajmer (Raj)

हिन्दी विभाग,

राजकीय महाविद्यालय, रायपुर

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय,

अजमेर

प्रस्तावित शोध कार्य के लिए राजकीय महाविद्यालय,रायपुर (भीलवाड़ा) का चयन किया गया हैं। यहाँ कार्यरत शोध निर्देशक महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर से शोध निर्देशक के रूप में पंजीकृत हैं। यह महाविद्यालय यू.जी.सी. एवं राज्य सरकार द्वारा स्वीकृति प्राप्त है। यहाँ शोधकार्य करने सम्बंधी आधुनिक युग की इन्टरनेट सुविधा है तथा जिले के पुस्तकालय में अध्ययन और शोध सामग्री संकलन की सुविधा भी उपलब्ध है।

4. Introduction, Importance of Proposed Investigation, Objective :

परिचय , प्रस्तावित शोध का महत्त्व व उद्देश्य –

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और वह समाज में वर्षों से चली आ रही सामाजिक परम्पराओं और रीति–रिवाजों का निर्वाह करता आया है। किसी भी राष्ट्र की लोकसंस्कृति वहाँ के निवासियों के जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग होती है और यह समय के साथ निरन्तर बदलती रहती है। जब उच्च शिक्षित वर्ग ऊँची सँस्कृति के नशे में सांस्कृतिक परिवर्तन करता है तो लोकसंस्कृति का प्रभाव धुंधला जाता है, लेकिन ग्राम्यजीवन में लोकसांस्कृतिक परिवर्तन अपेक्षाकृत कम नजर आता है। वहाँ आधुनिकीकरण के प्रभाव की गति कम दिखाई देती है । ग्राम्य जीवन पर सभ्यता का प्रभाव शहरी जीवन की अपेक्षा कम है।

सामान्यतः समाज में शिक्षित व अशिक्षित दोनों प्रकार के लोग निवास करते हैं। साहित्य सृजन में शिक्षित वर्ग का ही प्रभुत्व रहा है और यह वर्ग हमेशा से ही समाज व साहित्य का प्रतिनिधित्व करता आया है। अशिक्षित वर्ग तो मात्र मूकदर्शक बनकर शिक्षित वर्ग के हाथों शोषित होता आया है। उससे हमेशा यही अपेक्षा की जाती है कि वह शिक्षित वर्ग का अनुसरण करे।

अशिक्षित वर्ग अपनी अलग दुनिया का निर्माण करता है। वह साहित्यिक भाषा के स्थान पर लोकगीत, शिष्ट नृत्य मुद्राओं के स्थान पर अनगढ़ लोकनृत्य शैली, शास्त्रीय संगीत की राग–रागिनियों के स्थान पर बिरहा, फगुआ जैसे मुक्त स्वरों का निर्माण करता है और अपनी दमित इच्छाओं की प्रतिपूर्ति करता है। इस प्रकार वह अपनी एक अलग लचीली संस्कृति का निर्माण करता है और इसे ही लोक संस्कृति के रूप में स्वीकृति मिलती है।

राजस्थान की लोकसंस्कृति में लोकसंगीत, लोकनाटकों, ख्यालों, लोकनृत्यों का अपना अलग ही स्थान है। इनका इतिहास काफी प्राचीन रहा है। राजस्थान की लोकसंस्कृति के प्रमुख रूप से तीन आधार स्तम्भ हैं – लोकनाट्य ,लोकगीत, और लोकनृत्य। वर्षों से चली आ रही इन विधाओं ने राजस्थानी लोकसंस्कृति को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक अलग पहचान दी है। विजयदान देथा ने अपने साहित्य में इन रूपों को आत्मसात कर इनके वैविध्य को उद्‌घाटित किया है।

विजयदान देथा को लोग प्यार से बिज्जी कह कर संबोधित करते हैं और उन्हें राजस्थान के शेक्सपीयर के रूप में जानते हैं । बिज्जी ने राजस्थान के एक छोटे से कस्बे बोरून्दा में रहकर एक ऐसे साहित्य की रचना की जिससे उनकी पहचान विश्व पटल पर बन गई। वे ऐसी शख्सियत हैं, जिन्होंने अपनी जमीन से जुड़कर आस–पास के गाँवों में घूम–घूमकर मेघवाल जाति के लोगों व चौपालो में सुनाई जाने वाली लोक कथाओं, लोकगीतों को सुना, समझा और उन्हें नए रूप में प्रस्तुत किया ।

बिज्जी का साहित्य उन लोककथाओं का संग्रह है, जो राजस्थान की माटी की सोंधी खुशबू बिखेरता है। लोक संस्कृति का यह अपनापन ही सभी को आकर्षित करता है इससे देशी ही नहीं बल्कि विदेशी भी प्रभावित होने से नहीं बच पाये। साहित्य के जमीनी जुड़ाव के कारण बिज्जी का कथा साहित्य बोरून्दा से निकलकर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर निरंतर फैलता रहा। बिज्जी का कथालोक समाज के उस तबके को एक संदेश प्रदान करता है, जो भौतिकता के चकाचौंध में अपनी जमीन को भूल चुके हैं। बिज्जी ने गाँव से जुड़े रहकर, दलित जाति से सम्पर्क करके राजस्थानी लोक संस्कृति को एक अलग ही पहचान दिलाई है । इसी आकर्षणवश देश–विदेश से शोधकर्ता यहाँ आकर बिज्जी पर शोध कार्य करते रहे हैं और इसी आकर्षणवश बिज्जी पर शोध कार्य करने का साहसिक निर्णय लिया गया।

साहित्य को प्रसारित करने में सिनेमा, नाटकों एवं रंगमंच की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। सिनेमा और नाटक दोनों दृश्यगत विधा और अपनी प्रभावशीलता में निरंतर विस्तार कर रहे हैं। यही कारण है कि अनेक नाटकारों और फिल्मकारों ने देथा के साहित्य का नाट्य और फिल्म रूपांतरण से इसके नए आयामों और अनछुए पहलुओं को उद्‌घाटित किया है। बिज्जी के कथा साहित्य ने बॉलीवुड में अपनी एक अलग पहचान बनाकर दर्शकों को लोकसंस्कृति से रूबरू करवाने में सफलता हासिल की है। 1973 में मणिकौल ने ***दुविधा,*** 1975 में श्याम बेनेगल ने ***चरणदास चोर***, 1986 में प्रकाश झा ने ***परिणति*** , 2005 में अमोल पालेकर ने ***पहेली*** व 2014 में मरूधर आर्ट्स द्वारा ***लाजवन्ती (द ऑनर कीपर)*** का फिल्म रूपांतरण किया गया। नाट्य रूपान्तरण के अन्तर्गत हबीब तनवीर द्वारा ***चरणदास चोर*** , उदयशंकर द्वारा ***बिज्जी का खजाना*** (दूरदर्शन पर प्रसारित) प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त बिज्जी की अनेक लघु कथाओं

का भी नाट्य एवं फिल्म रूपान्तरण किया गया है। साथ ही बिज्जी की कई कहानियों को सफलता पूर्वक मंचित भी किया गया है। इससे स्पष्ट है कि बिज्जी का कथा साहित्य अपना विशेष महत्त्व रखता है, जिसे फिल्म व नाट्य रूपान्तरण और रंगमंच के माध्यम से जीवन्त करने का प्रयास किया जा रहा है।

साहित्य के अभाव में सिनेमा केवल मनोरंजन का माध्यम बन कर रह जाता है। सिनेमा की उत्कृष्टता कई अर्थों में साहित्य की सृजनात्मकता पर निर्भर है। कुछ इसी प्रकार से रंगमंच भी कथा साहित्य को और भी अधिक जीवन्त करने का माध्यम रहा है। एक पाठक दर्शक के रूप में अपने सामने घटित कार्य–व्यापार को देख रसास्वादन का विशेष आनंद प्राप्त करता है। यही कारण है कि आजकल कहानी का रंगमंच लोकप्रिय बनता जा रहा है। यहाँ तक कि सिनेमा में रंगमंच की विधाओं का निरूपण कर उसे आकृष्ट बनाने का प्रयास रहा है। रंगमंचीय प्रवृतियों के बिना सिनेमा केवल तकनीक बन कर रह जाता है। सिनेमा को मजबूती प्रदान करने में रंगमंच की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। ऐसी स्थिति में यह कहने में संकोच नहीं रहता कि हिन्दी सिनेमा आधुनिकता की प्रतिच्छाया से जुड़कर और गतिशील और रंगमंच कला को पाकर समृद्ध होता जा रहा है। देथा का साहित्य सिनेमा को एक तरह से चुनौती देकर समृद्ध बनाता है। उनका साहित्य मानवीय जीवन के अनछुए पहलुओं को समझने का एक माध्यम है, लोक संस्कृति को जीवंत करने का प्रयास है, सामाजिक चेतना का विकास करने का तरीका है, आपसी समन्वय व भाईचारे को विकसित करने की कला है। सामाजिक जीवन में प्रत्येक पक्ष की भूमिका व प्रस्थिति के अवलोकन को आधार मानकर प्रस्तुत शोधकार्य की दिशा में आगे बढ़ने का एक प्रयास है।

प्रस्तुत शोध–कार्य का उद्देश्य निम्नलिखित बिंदुओं में समेटा जा सकता है –

1 – विजयदान देथा के कथा साहित्य विशेषतः नाट्य व फिल्म रूपान्तरण की चुनौतियों का अध्ययन करना ।

2 – विजयदान देथा के कथा साहित्य में नाट्य व फिल्म रूपान्तरण के लोक सांस्कृतिक स्वरूप का अध्ययन करना ।

3 – विजयदान देथा के कथा साहित्य में नाट्य व फिल्म रूपान्तरण तथा लोकजीवन के अन्तःसंबधों का अध्ययन करना ।

4 – विजयदान देथा के कथा साहित्य में नाट्य व फिल्म रूपान्तरण पर पड़ने वाले लोक सांस्कृतिक प्रभावों का अध्ययन करना ।

5 – विजयदान देथा के कथा साहित्य के नाट्य एवं फिल्म रूपान्तरण फलस्वरूप साहित्य एवं लोकजीवन में आए परिवर्तनों का अध्ययन करना ।

5. Review (Work already done on the subject of proposed Research Study : अध्ययन विषय पर पूर्व पर किये गये शोधकार्य का पुनरावलोकन –

अ. शोध–ग्रन्थ –

अशोक कुमार मीणा (2012) – ***विजयदान देथा का कथा साहित्य के हिन्दी अनुवाद का भाषिक और सांस्कृतिक विश्लेषण –***प्रस्तुत शोध–ग्रन्थ में शोधकर्ता ने विजयदान देथा के कथा साहित्य के भाषिक अनुवाद के माध्यम से राजस्थानी लोकजीवन की छवि को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। शोधकर्त्ता ने कथा साहित्य के हिन्दी अनुवाद में आनेवाली समस्याओं का वर्णन करते हुए उनके समाधान का पक्ष रखा है। शोध–ग्रन्थ देथा के कथा साहित्य का विश्लेषण करता हुआ प्रतीत होता है। इससे लोकजीवन की विधाओं का आभास हो पाया है।

ब. शोध–पत्र –

अवधेश झा (2014) – ***लोकरंग से रंगमंच की कथा यात्रा में चोर –*** प्रस्तुत शोध–पत्र में विजयदान देथा की कहानी ***फितरती चोर*** को हबीब तनवीर द्वारा ***चरनदास चोर*** के रूप में नाट्य रूपान्तरित किया गया। इस कहानी में निहित पात्र चोर के माध्यम से समाज में व्याप्त सामाजिक, राजनैतिक विसंगतियों और विरोधाभासों को प्रकट करने का प्रयास किया गया है।

स. आलेख –

हबीब तनवीर, *चरणदास चोर के पीछे बहुतेरी कहानियाँ,* सम्बंधित आलेख में हबीब तनवीर ने चरणदास चोर पर अलग–अलग जगह किये गए मंचन का अनुभव प्रकट किया है। मंचन के सम्बंध में बिज्जी से मुलाकात व कहानी की भूमिका व मंचन में आने वाले बहुतेरे पक्षों पर वार्ता कर उसका जिक्र किया है।

शशिकांत – ***बिज्जी के पास है लोककथा के जादू का बक्सा –*** लेखक ने प्रस्तुत लेख में यह प्रकट किया है कि साहित्यकार अपने साहित्य को प्रमुख बनाने हेतु अथक प्रयास करता है। कई साहित्यकारों ने लघुकथाओं को अपने साहित्य का आधार बनाया है, लेकिन बिज्जी का कथा साहित्य उन सब से अलग रहा। लोकजीवन, जीवन का आधार है – इसको समझने के लिए उनका प्रयास और हर स्तर पर सम्बंधित जानकारी जुटाने के लिए अंतकाल तक बना रहा ।

इनमें नवीनतम नाट्य और फिल्म रूपांतरण के विविध पक्षों का समग्रता के साथ अनुसंधानपरक विश्लेषण नहीं किया गया है।

6. Research Gap identified in the proposed Field of Investigation

(Based on the Review) :

प्रस्तावित शोध कार्य व पूर्व में किये गये शोधकार्य के अन्तराल का आंकलन –

साहित्य पुनरावलोकन के पश्चात यह स्पष्ट हो पाया है कि विजयदान देथा पर अब तक शोध–कार्य की उपेक्षा ही हुई है। केवल एक दो शोध–कार्य नजर आए हैं, जिसमें उनके कथा–साहित्य की भाषा पर शोध–कार्य हुआ है। कुछ रिसर्च पेपर व आलेख प्रकाशित हुए हैं, जिनमें लोकस्वरूप व लोकरंग की व्यवस्था को इंगित किया गया है। अभी भी इनके कई महत्त्वपूर्ण पक्ष अनछुए हैं, जिन पर शोध–कार्य करना अभी शेष है। प्रस्तावित शोध में विजयदान देथा के अनछुए पहलुओं में उनके कथा साहित्य पर आधारित नाट्य व फिल्म रूपान्तरण के लोकतांत्रिक ओर लोक सांस्कृतिक स्वरूप को शोधकार्य का हिस्सा बनाया गया है। इसमें कथा, नाटक और फिल्म विधा के परस्पर संबंध और प्रभाव का विविध आधुनिक विमर्श की दृष्टि से विश्लेषित किया जाएगा। यह शोध–कार्य की उच्चता प्रकट करने के लिए शोध–अंतराल को पाटने का कार्य करेगा।

7. Major Hypothesis (If any) : मुख्य परिकल्पना –

आज लोकजीवन की पुरातन छवि अपना वजूद भूमण्डलीकरण के दौर में लगभग खो चुकी है। साहित्यकारों ने कथा–साहित्य में लोकजीवन का प्रकटीकरण करके इसे सहेजा है। बिज्जी के कथा–साहित्य पर आधारित नाट्य व फिल्म रूपान्तरण ने लोकसंस्कृति की तस्वीर प्रस्तुत कर एक नवीन परिभाषा गढ़ी है। इससे लोकजीवन के पुरातन स्वरूप का आभास हुआ है व इसकी खुशबू ने राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नवीन आयाम गढ़े हैं। सम्बंधित शोध द्वारा लोकजीवन के सभी पक्षों को पहचानना है और उसे सरल रूप में प्रस्तुत करना है। यहाँ नाटक एवं फिल्म के बढ़ते प्रभाव तथा तकनीकी विकास के आलोक में कथ्य की रंगमंचीय व सिनेमाई प्रस्तुति में और कथा के मूल स्वभाव में परिवर्तन के परख का प्रयास किया जाएगा।

8. Research Methodology : शोधपद्धति –

प्रस्तावित शोध को व्यावहारिक एवं आनुभाविक स्वरूप प्रदान किया गया है। इस अनुसंधान को प्रसिद्ध शोधकर्ता जोसफ गिबाल्डी के अनुसरण पद्धति के आलोक में करने का प्रयास किया जाएगा। आनुभाविक अध्ययन के लिए राजस्थान के बीकानेर में स्थित राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी एवं जोधपुर के रूपायन संस्थान व लोक कला केन्द्र और बिज्जी की पैतृक भूमि बोरुन्दा को सम्मिलित किया गया है।

प्रस्तावित अध्ययन में इन संस्थाओं में कार्यरत कर्मचारियों, विजयदान देथा के कथा साहित्य से जुड़े नाट्यकर्मियो व फिल्मकर्मियों की अनुभूतियों का आंकलन किया जाएगा।

प्रस्तुत शोध में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का संकलन किया जाएगा।

(क) प्राथमिक आंकड़े –(Primary Data)

प्राथमिक आंकडों का संग्रह, अध्ययन क्षेत्र में सर्वेक्षण द्वारा अनुसूची, साक्षात्कार एवं अवलोकन के माध्यम से किया जाएगा।

(ख) द्वितीयक आंकड़े–(Secondary Data)

द्वितीयक आंकड़ों का संग्रह विषय पर उपलब्ध साहित्य आलेखों, शोध–पत्रों, पुस्तकों, एवं प्रतिवेदनों आदि के माध्यम से किया जाएगा। इस क्रम में **सपना माथुर के** ***नादिरा बब्बर्स न्यू प्ले इज़ इन्सपायर्ड बाय द स्टॉरिज़ ऑफ विजयदान देथा,*** मालिनी नैयर के ***बियोन्ड प्रेमचन्द एण्ड मन्टो –हिन्दी थिएटर इज़ फाइन्डिंग इन्सपिरेशन इन द विशिंग ऑफ विजयदान देथा*** के अंग्रेजी आलेख और **क्रिस्टी मेरिल** (2010) के ***विजयदान देथा, बिटविन द फोकटॉक एण्ड द शॉर्ट स्टोरी*** तथा **शितान्शु भारती** (2016) के ***फॉकलोर एलिमेन्ट्स इन द वर्क ऑफ विजयदान देथा*** के अंग्रेजी शोध–पत्रों को भी ध्यान में रखा जाएगा।

संगृहित आंकड़ों का विश्लेषणात्मक अध्ययन कर निष्कर्ष निकाले जाएँगे।

विजयदान देथा का कथा साहित्य

(नाटक व फिल्म रुपान्तरण के लोक सांस्कृतिक स्वरुप का अध्ययन)

विषय अनुक्रमणिका

1. प्रथम अध्याय – कथा साहित्य के नाट्य व फिल्म रूपान्तरण का लोकसांस्कृतिक संदर्भ

1.1 कथा, नाटक और फिल्म की संरचना
1.2 रंगमंच, सिनेमा और दूरदर्शन
1.3 नाट्य और फिल्म रूपान्तरण की परम्परा और विकास
1.4 कथा के रूपान्तरण और लोकसंस्कृति में अन्तर्सम्बंध
1.5 नाटक व फिल्म रूपान्तरण में लोकसंस्कृति का स्वरूप
1.6 मूल्यांकन

2. द्वितीय अध्याय – विजयदान देथा का व्यक्तित्व व कृतित्व

2.1 आरंभिक जीवन और शिक्षा
2.2 सृजन संसार
2.3 कथा साहित्य का लोकसांस्कृतिक वैविध्य
2.4 प्रतिष्ठा एवं सम्मान
2.5 मूल्यांकन

3. तृतीय अध्याय –विजयदान देथा के कथा साहित्य का नाट्य रूपान्तरण का लोकसांस्कृतिक संदर्भ

3.1 विजयदान देथा के कथा साहित्य नाट्य रूपान्तरण
3.2 कथा साहित्य के नाट्य रूपान्तरण में लोकसांस्कृतिक संदर्भ
3.2.1 सामाजिक परिवेश
3.2.2 स्त्रीगत अर्थ संदर्भ
3.2.3 लोक संवेदना के आयाम
3.3 नाट्य रूपान्तरण की शैली और संवाद का स्तर
3.4 नाट्य रूपान्तरण में लोकसंस्कृति का स्वरूप
3.5 मूल्यांकन

4. चतुर्थ अध्याय –विजयदान देथा के कथा साहित्य का फिल्म रूपान्तरण का लोकसांस्कृतिक संदर्भ

4.1 कथा साहित्य और फिल्मांकन में लोकसंस्कृति का स्वरूप,
4.2 फिल्मांकन में लोकसंस्कृति का स्वरूप
4.2.1 सामाजिक परिवेश
4.2.2 स्त्रीगत अर्थ संदर्भ
4.2.3 लोक संवेदना के आयाम
4.3 फिल्मांकन में भाषा और संवाद का स्तर
4.5 फिल्मांकन लोकसंस्कृति का स्वरूप
4.6 मूल्यांकन

5. पंचम् अध्याय – विजयदान देथा के कथा साहित्य के नाट्य रूपान्तरण और फिल्म रूपान्तरण की उपलब्धियाँ और सीमाएँ

5.1 नाट्य रूपान्तरण में लोकपरिदृश्य और दृष्टि
5.2 फिल्म रूपान्तरण में लोकपरिदृश्य और दृष्टि
5.3 मूल्यांकन

– उपसंहार

परिशिष्ट – विजयदान देथा से सम्बंधित प्रमुख व्यक्तियों के साक्षात्कार

1. प्रमुख संस्थान कर्मचारियों का
2. प्रमुख नाट्य कर्मियों का
3. प्रमुख फिल्मकर्मियों का

9. Reference cited : संदर्भ सूची –

आधार सामग्री –

अ. **कथा साहित्य – जिनका फिल्मांकन किया जा चुका हैं :–**

क. सं	कहानी का नाम	संग्रह का नाम	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
1.	दुविधा	विजयदान देथा की लोकप्रिय कहानियाँ	प्रभात प्रकाशन,नई दिल्ली	2016
2.	परिणति	अनुपलब्ध		
3.	लाजवन्ती	छब्बीस कहानियाँ	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण, 2011
4.	पुश्तैनी तलवार (लघु फिल्म)	बातां री फुलवारी भाग–1	आर. जी प्रकाशन, बहादुरगढ़, हरियाणा	2013
5.	खुशी का पश्चाताप (लघु फिल्म)	बातां री फुलवारी भाग–1	आर. जी प्रकाशन, बहादुरगढ़, हरियाणा	2013
6	हवाई झगड़ा (लघु फिल्म)	बातां री फुलवारी भाग–1	आर. जी प्रकाशन, बहादुरगढ़, हरियाणा	2013
7.	मैं पड़ी चुल्हे में (लघु फिल्म)	बातां री फुलवारी भाग–1	आर. जी प्रकाशन, बहादुरगढ़, हरियाणा	2013
8.	मूँछ–मूँछ का अंतर (लघु फिल्म)	बातां री फुलवारी भाग–1	आर. जी प्रकाशन, बहादुरगढ़, हरियाणा	2013
9.	जीभ का रस टपके (लघु फिल्म)	चौधराईन की चतुराई	सायर प्रकाशन, बोरुन्दा	1997
10.	ये गाँव के गँवार लोग (लघु फिल्म)	बातां री फुलवारी भाग–5	रुपायन सस्थान, बोरुन्दा	
11.	मुंझी सूरमा (लघु फिल्म)	छब्बीस कहानियाँ	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2011
12.	आशा अमरधन (लघु फिल्म)	विजयदान देथा की लोकप्रिय कहानियाँ	प्रभात प्रकाशन,नई दिल्ली	2016

ब. कथा साहित्य – जिनका नाट्य रूपान्तरण किया जा चुका हैं :–

क.सं	कहानी का नाम	संग्रह का नाम	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
1.	इब्राहिम बैंड मास्टर	अन्तराल	जनवाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	1998
2.	दूरी	छब्बीस कहानियाँ	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2011
3.	अनमोल खजाना	छब्बीस कहानियाँ	वाणी प्रकाशन, नईदिल्ली	2011
4.	रोटी की बात	उजाले के मुसाहिब	हिन्दी बुक सेन्टर,नई दिल्ली	2006
6.	अनेकों हिटलर	छब्बीस कहानियाँ	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2011
7.	सिकंदर और कौआ	सपनप्रिया	भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली	चौथा संस्करण, 2006
8.	बड़ा कौन?	छब्बीस कहानियाँ	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2011
9.	राज़ीनामा	छब्बीस कहानियाँ	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2011
10.	बड़ा भांड	अनुपलब्ध		
11.	गोगे की मिठाई	फुलवारी भाग–8	रुपायन संस्थान, बोरुन्दा	
12.	चौबोली	चौबोली और अन्य कहानियाँ	कथा प्रकाशन, नई दिल्ली	2010
13.	खीर वाला राज्य	सपनप्रिया	भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली	चौथा संस्करण, 2006
14.	बेटो किण रो	फुलवारी भाग–10 (हिन्दी अनुवाद)	साहित्य अकादमी,रवीन्द्र भवन, नयी दिल्ली	1992
15.	उलझन	छब्बीस कहानियाँ	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2011
16.	नगिन तेरा वंश बढ़े	छब्बीस कहानियाँ	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2011
17.	दोहरी जिदंगी	दोहरी जिदंगी	पेंगुइन प्रकाशन, गुड़गाँव, हरियाणा	2007

स. कथा साहित्य – जिनका फिल्मांकन व नाट्य रूपान्तरण किया जा चुका हैं :–

क.सं	कहानी का नाम	संग्रह का नाम	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
1.	आशा अमरधन	उजाले के मुसाहिब	हिन्दी बुक सेन्टर,नई दिल्ली	2006
2.	फितरती चोर	छब्बीस कहानियाँ	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2011
3.	दुविधा	विजयदान देथा की लोकप्रिय कहानियाँ	प्रभात प्रकाशन,नई दिल्ली	2016
4.	मुँझी सूरमा	छब्बीस कहानियाँ	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2011

प्रस्तावित फिल्म –

1. दोहरी जिन्दगी(कहानी) – निर्देशकः अमोल पालेकर

सहायक ग्रन्थ –

1. अजय ब्रामतमज : *सिनेमा, समकालीन सिनेमा,* वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2006
2. अनुपम ओझा : *भारतीय सिने सिद्वान्त,* राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002
3. अरुण कुमार :*श्याम बेनेगल भारतीय संवेदना और अधिकारों का सिनेमा,* साहित्यागार पब्लिकेशन,जयपुर, 2017
4. एन.के. भारती : *हिन्दी सिनेमा का सामाजिक संदर्भ,* हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली, 2015
5. कुमार साहनी और जैकेस(संपादक) : *सिनेमा एंड टेलीविजन,* ओरिएंटल लोग मैन लिमिटेड, नई दिल्ली, 1991
6. कृष्ण कुमार : *कहानी के नये प्रतिमान,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष –2005
7. कैलाश कबीर : *विजयदान देथा रचना संसार,* हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली-2009
8. गिरिश रस्तोगी : *बीसवीं शताब्दी का हिन्दी नाटक और रंगमंच,* भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, 2011
9. चन्द्रकांत मिसल : *सिनेमा व साहित्य का अन्तःसम्बंध,* हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली-2014
10. जयप्रकाश चौकसे : *राजकपूर,* संवाद प्रकाशन, मेरठ (उ.प्रं.) 2002
11. जयप्रकाश चौकसे : *सिनेमा जीवन की पाठशाला,* हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली–2011
12. जवरीमल्ल पारख : *लोकप्रिय सिनेमा और सामाजिक यथार्थ,* अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली–2001
13. जी.एस मिश्रा, सरला कुशवाहा : *हिन्दी कथा साहित्य,* छत्तीसगढ राज्य हिन्दीग्रन्थ अकादमी, 2000
14. दयानन्द : *सिनेमा और सामाजिक सरोकार,* हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली-2015
15. नगेन्द्र : *हिन्दी साहित्य का इतिहास,* नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दरियागंज, दिल्ली, 1989
16. नन्द किशोर, आचार्य : *संस्कृति की सामाजिकी,* वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर – 2005
17. नारायण भदू : *संस्कृति के प्रश्न,* वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर – 2005
18. परशुराम शुक्ल विहरी : *लोकसंस्कृति : अवधारणा और प्रकाशक ,* हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2011
19. पारख जवरीमल्ल : *लोकप्रिय सिनेमा और सामाजिक यथार्थ,* अनामिका पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2001
20. पुष्पेन्द्र अवस्थी, भारतवंशी : *भाषा एवं संस्कृति,* किताबघर प्रकाशन, 2015
21. बच्चन सिहं : *आधुनिक हिन्दी आलोचना के बीज शब्द,* हिन्दी बुक सेन्टर , नई दिल्ली, 2015
22. बलराज साहनी, : *मेरी फिल्मी आत्मकथा,* हिन्दी पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, 1974

23. भरतमुनि कृत : *नाट्यशास्त्र, परिमल पब्लिकेशन, नई दिल्ली* 1998
24. मनमोहन चड्ढा : *हिन्दी सिनेमा का इतिहास(प्रथम संस्करण),* सचिन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1990
25. मनोहर शर्मा : *लोक साहित्य की सांस्कृतिक परम्परा,* बोहरा प्रकाशन, जयपुर, 1971
26. मनोहर श्याम जोशी : *पटकथा लेखन*, एक परिचय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ,2008
27. मैनेजर पाण्डेय : *साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका,* हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, 1989
28. महेन्द्र मित्तल, : *भारतीय चलचित्र,* अलंकार प्रकाशन दिल्ली, 1975
29. महेश आनन्द : *कहानी का रंगमंच,* वाणी प्रकाशन, नईदिल्ली,–2001
30. राकेश मोहन (संपा) : *साहित्य और संस्कृति,* राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली
31. रामकृष्ण : *फिल्म जगत का अर्द्धशती का रोमांस*, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नईदिल्ली, 2010
32. रामचन्द्र शुक्ल : *हिन्दी साहित्य का इतिहास,* नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, संवत 2049
33. रामदास नारायण टोण्डे : *हिन्दी साहित्य और फिल्मांकन,* हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली, 2016
34. रामानन्द : *सांस्कृतिक भाषा विज्ञान,* भारतीय पुस्तक मंदिर, भरतपुर, (राज.), 1983
35. रामशरण जोशी : *मीडिया और बाजारवाद*, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 2004
36. रीतारानी पालीवाल : *रंगमंच नया परिदृश्य,* लिपि प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978
37. लक्ष्मीकुमारी चुडावत : *राजस्थान के लोक सांस्कृतिक लोकगीत*, कमल बुक प्रकाशन, नईदिल्ली, 2002
38. वशिष्ट नारायण त्रिपाठी : *नाटक के रंगमंचीय प्रतिमान*, जगतराम एंड संस, नईदिल्ली, प्रथम संस्करण, 1991
39. वही : *भारतीय भाषाओं का नाट्य साहित्य*, नेशनल पब्लिकेशन्स हाऊस, नई दिल्ली, 1983
40. विनोद भारद्वाज *: समय और सिनेमा, प्रवीण प्रकाशन*, नई दिल्ली, 1994
41. विश्वनाथ मिश्र : *हिन्दी चलचित्रों में साहित्यिक उपादान,* हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, 1980
42. सत्यकाम : *भारतीय उपन्यास की दिशाएं,* भारतीय प्रकाशन संस्थान, 2012
43. सत्यमेव त्रिपाठी : *लोक संचार माध्यम– प्रस्तुति के रचनात्मक आयाम*, अमन प्रकाशन, कानपुर
44. सत्यजीत रे : *चलचित्र, कल और आज*, राजपाल एंड संस, नई दिल्ली–1982
45. सत्यदेव त्रिपाठी : *लोक संचार माध्यम,* प्रस्तुति के रचनात्मक आयाम, अमन प्रकाशन, कानपुर, 1994
46. संजीव श्रीवास्तव : *हिन्दी सिनेमा का इतिहास,* प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, 2006
47. सीताराम चतुर्वेदी : *भारतीय तथा पाश्चात्य रंगमंच*, हिन्दी समिता सूचना विभाग, लखनऊ, 1964
48. सुधीर पचौरी : *दूरदर्शन की भूमिका,* सचिन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1991
49. सुरेश शर्मा : *विमलराय का देवदास,* राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998
50. हरीश कुमार : *सिनेमा और साहित्य,* संजय पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली,

<u>कोष ग्रन्थ :–</u>

1. अमरनाथ सिहं : *हिंदी आलोचना की पारिभषिक शब्दावली*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009
2. धर्मेन्द्र वर्मा (संपादक) : *बृहत् हिन्दी शब्दकोश*, प्रभात प्रकाशन, 2010
3. धीरेन्द्र वर्मा, ब्रजेश्वर वर्मा, राम स्वरूप चतुर्वेदी, धर्मवीर भारती(संपादक),रघुवंश(संयोजक) : *हिन्दी साहित्य कोष भाग–1 पारिभाषिक शब्दावली*, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी, 1980
4. धीरेन्द्र वर्मा,ब्रजेश्वर वर्मा, राम स्वरूप चतुर्वेदी, धर्मवीर भारती(संपादक),रघुवंश(संयोजक) :*हिन्दी साहित्य कोष भाग–2 नामवाची शब्दावली*, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी, 2006

5. सीताराम लालस : *राजस्थान हिन्दी शब्दकोष भाग–1व 2,* राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, 2006

6. विजयदान देथा : *राजस्थानी हिन्दी कहावत कोष(हिन्दी अनुवाद सहित)(6 भागों में),* लोकचेतना प्रकाशन, 2016

अंग्रेजी -

1. अन्जुम कात्याल – *हबीब तनवीर* ,सेज पब्लिकेशन, यू.एस.ए. - 2012

2. रूठ वनीता – *द डाइलेमा एण्ड अदर स्टोरीज,* (अनुवाद) ,मुंशी पब्लिकेशन, नईदिल्ली – 1996.

सिनेमा –

1. ***चरणदास चोर*** – श्याम बेनेगल द्वारा निर्देशित, स्मिता पाटिल , लालूराम, सुन्दर आदि द्वारा अभिनीत, चिल्ड्रन्स फिल्म सोसाइटी ऑफ इण्डिया, द्वारा निर्मित, 1975
2. ***दुविधा*** – मणिकॉल द्वारा निर्देशित, राईसा पपमसी, रविमेमन द्वारा अभिनीत, फाइनेन्स कॉरपोरेशन द्वारा निर्मित, 1973
3. ***परिणति*** – प्रकाश झा द्वारा निर्देशित, बसंत जोसलकर, सुरेखा सीकरी, नंदिता दास द्वारा अभिनीत, एक दृष्टिकोण द्वारा निर्मित, 1989
4. ***पहेली*** – अमोल पालेकर द्वारा निर्देशित, शाहरूख खान, रानी मुखर्जी, अमिताभ बच्चन, अनुपम खेर द्वारा अभिनीत, गौरी खान द्वारा निर्मित, 2005
5. ***लाजवन्ती (द ऑनर कीपर)*** – पुष्पेन्द्र सिंह द्वारा निर्देशित, संघमित्रा, हितेशी, पुष्पेन्द्र सिंह, सुगना देवी द्वारा अभिनीत, मरूधर आर्ट्स द्वारा निर्मित, 2014

टेलीविजन –

1. हबीब तनवीर : ***चरण दास चोर*** अहमदाबाद व दिल्ली दूरदर्शन द्वारा प्रसारण, 1975
2. उदय प्रकाश : ***बिज्जी का खजाना*** (देथा की 10 कहानियों का संग्रह), दूरदर्शन, 2003

रंगमंच –

1. ***दोहरी जिन्दगी*** – जवाहर रंगमंच, जयपुर, गुरलीन जज द्वारा निर्देशित
2. ***बड़ा भांड*** – नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, नई दिल्ली, अजय कुमार द्वारा निर्देशित
3. ***गोगे की मिठाई*** – अनुरागना थिएटर ग्रुप, दिल्ली, अशराफ अली द्वारा निर्देशित
4. ***दुविधा*** – भारतेन्दु नाट्य एकेडमी देवेन्द्र राज अंकुर द्वारा निर्देशित, भारतीय फिल्म संस्थान पूणे अजय कुमार द्वारा निर्देशित
5. ***दास्तान–ए–चौबोली*** –पृथ्वी थिएटर, महमूद फारूकी द्वारा निर्देशित
6. ***खीर वाला राज्य –*** थिएट्रिकल प्रोडक्शन
7. ***चरणदास चोर*** – आकांक्षा थिएटर ग्रुप, नया थिएटर ग्रुप, भोपाल और देबेश चट्टोपाध्याय द्वारा निर्देशित
8. ***उलझन –*** थिएटर कंपनी, नादिरा बब्बर्स द्वारा निर्देशित
9. ***मुँझी सूरमा*** – थिएटर कंपनी, नादिरा बब्बर्स द्वारा निर्देशित
10. ***नागिन तेरा वंश बढ़े*** – थिएटर कंपनी, नादिरा बब्बर्स द्वारा निर्देशित
11. ***बेटो किण रो*** – जवाहर कला केन्द्र, संदीप मदान द्वारा निर्देशित

इंटरनेट से –

अ. साक्षात्कार

1. केदारनाथ सिंह –(साक्षात्कर्त्ता– अमरेश द्विवेदी), बी.बी.सी. हिन्दी, 10 नव. 2013
2. विजयदान देथा– किस्सली – उदयप्रकाश के साथ, जयपुर फेस्टिवल, 05 अक्टूम्बर 2015
3. गुलजार –*सिनेमा शुड डिपेन्ड अपॉन द लिटरेचर ,* लोकसत्ता – 67 वीं वर्षगांठ पर, 18 जन. 2015
4. विजयदान देथा– (साक्षात्कर्त्ता –सपना महेश), यूट्यूब वीडियो, 23 अक्टूम्बर 2011

ब. डॉक्यूमेंट्री

1. उदय प्रकाश – बिज्जी द लिजेण्ड ऑफ दास्तान , साहित्य एकेडमी 11 नव.2013
2. बिज्जी – उदय प्रकाश, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2000
3. परोमिता वेहरा – पार्टनर्स इन क्राइम , डॉक्यूमेंट्री
4. सपना महेश – विजयदान देथा डॉक्यूमेंट्री

स – शोध–पत्र – हिन्दी

1. ऑनलाइन हिन्दी जर्नल – डॉ.मनीष कुमार मिश्रा ,*हिन्दी सिनेमा के विविध आयाम,* 14 नव. 2013
2. परिवर्तन – मनीष कुमार जैसल, *फिल्मकार श्याम बेनेगल का हिन्दी सिनेमा में योगदान – एक अध्ययन,* अप्रेल–जून 2014
3. परिवर्तन – अनीता गुप्ता, *शैलीबद्ध और कहानी का रंगमंच विशेष संदर्भ : देवेन्द्र राज अंकुर,* अप्रेल–जून 2016
4. प्रतिमान – अमितेश कुमार– *हिन्दी रंगमंच का उदय,* जुलाई, दिस. 2012
5. बिलिंगुवल जर्नल्स ऑफ ह्यूमिनस एण्ड सोशल साईन्सीज – डॉ. सिद्वार्थ शंकर – *किसकी संस्कृति कैसा अध्याय,* 15 जन. 2010
6. मूक आवाज – अवधेश झा, *लोकरंग से रंगमंच की कथा यात्रा में चोर,* 27 अग. 2014
7. शोधसंचयन – ए.के. सिंह, *जनसंचार माध्यम एवमं साहित्य के अन्तर्सम्बंध,* 15 जन. 2012

शोध–पत्र – अंग्रेजी

1. द लिटरेरी हेरल्ड (इन्टरनेशनल ई जर्नल्स) – शितान्शु भारती, *फॉकलोर एलिमेन्ट्स इन द वर्क ऑफ विजयदान देथा* वोल्यूम– 01 मार्च, 2016

द - निबन्ध – अंग्रेजी

1. द मिडिल स्टेज़ , यूएसए - क्रिस्टी मेरिल–*विजयदान देथा : बिटविन द फॉकटॉल एण्ड द शॉर्ट स्टोरी,* 30 मई 2010

निबन्ध – हिन्दी

1. सरिता महर – *पाश्चात्य संस्कृति–भारतीय संस्कृति,* हिन्दी वार्ता, जून 2016

य. समाचार पत्र – हिन्दी

1. अपनी माटी – अग. 2017
2. जनसत्ता – 22 नव. 2016
3. जागरण जंक्शन –14 फर. 2013

4. देश बंधु – 02 सित. 2017
5. दैनिक जागरण – 16 जुलाई 2017
6. लोकसता – 18 सित. 2016
7. हिन्दी नेस्ट – फरवरी, 2001

समाचार पत्र – अंग्रेजी

1. हिन्दुस्तान टाईम्स - 08 अगस्त 2016
2. स्कॉल.इन - 23 मई 2017
3. द हॉलीवुड रिपोर्टर - 02 नवम्बर 2014

र – पत्रिकाएँ

1. नवनीत, मुम्बई–दिस. 1985
2. संवेद , दिल्ली –जन. 2015

ल – इंटरनेट साइट

1. गद्य कोश – 24 सितम्बर 2012
2. मगधसत्ता – 24 अक्टू. 2014
3. लेखक मंच – दिस. 2011
4- हिन्दी मीडिया इन – 09 नवं. 2008

वेबसाइट्स –

1. **www.shodhganga.inflibnet.ac.in**
2. **www.shodh.net**
3. **www.gadyakosh.org**
4. **www.lekhakmanch.com**
5. **www.apnimati.com**

हस्ताक्षर

दिनांक –............/........./2018

शोधकर्त्री – पीताम्बरी वर्मा

हस्ताक्षर मय सील व दिनांक
डॉ.मनीष रंजन
शोध पर्यवेक्षक एवं विभागाध्यक्ष
सह आचार्य – हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय, रायपुर (भीलवाड़ा)

हस्ताक्षर मय सील व दिनांक
प्राचार्य
राजकीय महाविद्यालय, रायपुर (भीलवाड़ा)